IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, February 2025
Impact Factor: 7.67

Hkkjr vkj ikfdLrku d f}i{kh; lc/kk dh i"BHkfe % lhekikj vkrdokn d fo'k'k lUnHk e ckyLo#i "kek] "kk/k Nk=] jktuhfr foKku foHkkx

Mk- vjfoUn dekj]
,lkfl,V ikQslj] jktuhfr foKku foHkkx
ekukM fo'ofo|ky;] gkiM] m-i-

'kk/k lkj % *प्रस्तुत शोध पत्र भारत और पाकिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों की पृष्ठभूमि में सीमापार आतंकवाद की उत्पत्ति, इसके स्वरूप, प्रमुख घटनाओं, भारत की सुरक्षा नीतियों और इसके वैश्विक व क्षेत्रीय प्रभावों का एक व्यापक विश्लेषण है। 1947 के विभाजन के बाद से ही दोनों देशों के संबंध कश्मीर मुद्दे और वैचारिक मतभेदों के कारण तनावपूर्ण रहे हैं। हालांकि, 1980 के दशक के उत्तरार्ध से पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ हजार घाव देकर मारना की सैन्य रणनीति के तहत सीमापार आतंकवाद को एक राज्य–नीति के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। यह शोध पत्र ऐतिहासिक दस्तावेजों, प्रमुख आतंकी हमलों (जैसे 2001 का संसद हमला, 2008 का मुंबई हमला, और 2019 का पुलवामा हमला) और हाल के भू–राजनीतिक बदलावों के आलोक में यह रेखांकित करता है कि जब तक सीमापार से आतंकवाद का ढांचा पूरी तरह नष्ट नहीं होता, तब तक दोनों देशों के बीच शांति वार्ताओं की बहाली असंभव है। अंत में, यह शोध पत्र भारत की रक्षा नीतियों में आए रणनीतिक बदलावों जैसे सर्जिकल स्ट्राइक और कूटनीतिक अलगाव तथा भावी समाधानों की समीक्षा करता है।*

e[; 'kCn % सीमापार आतंकवाद, भारत–पाकिस्तान संबंध, छद्म युद्ध, लश्कर–ए–तैयबा, जैश–ए–मोहम्मद, पुलवामा, कश्मीर मुद्दा, हाइब्रिड वॉरफेयर।

çLrkouk

दक्षिण एशिया की भू–राजनीति में भारत और पाकिस्तान के संबंध वैश्विक शांति के दृष्टिकोण से अत्यंत संवेदनशील हैं। दोनों देश परमाणु शक्ति संपन्न हैं, जिसके कारण इनके बीच का कोई भी तनाव पूरे विश्व को चिंतित करता है। भारत और पाकिस्तान का जन्म अगस्त 1947 में एक साथ हुआ, लेकिन दुर्भाग्य से दोनों देशों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध कभी स्थापित नहीं हो सके। विभाजन की त्रासदी, कश्मीर का विवाद और सीमाओं का निर्धारण कुछ ऐसे मुद्दे थे जिन्होंने दोनों देशों के बीच अविश्वास की एक गहरी खाई खोद दी। विगत सात दशकों में दोनों देशों ने चार बड़े युद्ध 1947–48, 1965, 1971 और 1999 लड़े हैं। लेकिन 1980 के दशक के बाद से, पारंपरिक युद्ध की भारी लागत और भारत की सैन्य श्रेष्ठता को देखते हुए, पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान ने अपनी रणनीति बदल दी। उन्होंने भारत के खिलाफ एक छद्म युद्ध की शुरुआत की, जिसका मुख्य हथियार सीमापार आतंकवाद बना।

सीमापार आतंकवाद से तात्पर्य एक ऐसे परिदृश्य से है जहां किसी एक देश की धरती का उपयोग दूसरे देश में हिंसक, विनाशकारी और आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने, आतंकवादियों को प्रशिक्षण देने, हथियार और धन मुहैया कराने तथा उन्हें सुरक्षित पनाहगाह देने के लिए किया जाता है। भारत के संदर्भ में, यह समस्या जम्मू–कश्मीर से शुरू होकर भारत के अन्य हिस्सों जैसे पंजाब, दिल्ली, मुंबई और पूर्वोत्तर तक फैल चुकी है। यह शोध पत्र इसी ज्वलंत समस्या के विभिन्न आयामों का विस्तृत तार्किक व तथ्यात्मक विश्लेषण करता है।

2- 'kk/k dh dk;çkyh

प्रस्तुत शोध पत्र मुख्य रूप से गुणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का व्यापक उपयोग किया गया है। सरकारी रिपोर्टों, अंतरराष्ट्रीय थिंक–टैंक की रिपोर्टों, प्रतिष्ठित अकादमिक जर्नल्स, समाचार पत्रों और रक्षा विशेषज्ञों के लेखों को इस शोध का आधार बनाया गया है।

'kk/k d e[; mís'; %

- भारत–पाक संबंधों में सीमापार आतंकवाद की ऐतिहासिक उत्पत्ति और इसके वैचारिक आधारों की पड़ताल करना।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, February 2025 Impact Factor: 7.67

- पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद को राज्य–नीति के रूप में इस्तेमाल करने के कारणों का विश्लेषण करना।
- भारत में घटित प्रमुख आतंकवादी घटनाओं और उनके दूरगामी सुरक्षा व राजनीतिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

,frgkfld i"BHkfe % lhekikj vkrædokn dh mRifÙk

भारत–पाक संबंधों में सीमापार आतंकवाद की जड़ें 1947 के कबाली आक्रमण से ही देखी जा सकती हैं, जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर कब्जा करने के लिए अनियमित लड़ाकों को आगे कर पीछे से अपनी सेना भेजी थी। लेकिन आधुनिक और संगठित रूप में सीमापार आतंकवाद की शुरुआत 1980 के दशक में हुई। इसके पीछे दो मुख्य अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय कारक थे–

lkfo;r&vQxku ;q) dk çHkko

1979 में जब सोवियत संघ ने अफगानिस्तान में हस्तक्षेप किया, तब अमेरिका और सऊदी अरब के वित्तपोषण से पाकिस्तान मुजाहिद्दीन लड़ाकों का मुख्य केंद्र बन गया। मुजाहिद्दीन को जिहाद के नाम पर कट्टरपंथी बनाया गया और उन्हें अत्याधुनिक हथियार जैसे स्टिंगर मिसाइलें और गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। 1989 में जब सोवियत सेना अफगानिस्तान से पीछे हट गई, तब पाकिस्तान के पास हथियारों, पैसों और प्रशिक्षित उग्रवादियों का एक विशाल नेटवर्क बच गया। पाकिस्तानी सेना ने इस पूरे ढांचे का रुख भारत के जम्मू–कश्मीर की ओर मोड़ दिया।

iatkc esa mxokn dk ç;ksx

1980 के दशक में पाकिस्तान ने भारत के पंजाब राज्य में सिख उग्रवाद खालिस्तान आंदोलन को भड़काने और हथियार सप्लाई करने में बड़ी भूमिका निभाई। इसे पाकिस्तान की रणनीति कहा गया। पाकिस्तान का उद्देश्य भारत को आंतरिक रूप से इतना अस्थिर कर देना था कि वह कश्मीर पर अपना ध्यान केंद्रित न कर सके। हालांकि, 1990 के दशक की शुरुआत तक भारत ने पंजाब में उग्रवाद पर पूरी तरह काबू पा लिया।

tEe&d'ehj esa ?kqliSB dk lLFkkxrdj.k

1989 के बाद जम्मू–कश्मीर में असंतोष की भावनाओं का लाभ उठाते हुए पाकिस्तान ने स्थानीय युवाओं को हथियार उठाने के लिए प्रेरित किया। जब स्थानीय उग्रवाद धीमा पड़ने लगा, तो पाकिस्तान ने लश्कर–ए–तैयबा, जैश–ए–मोहम्मद और हिज्बुल मुजाहिद्दीन जैसे अपने पालतू और पूरी तरह पाकिस्तानी मूल के आतंकवादी संगठनों को कश्मीर में झोंक दिया। इस प्रकार, कश्मीर का मुद्दा एक राजनीतिक आंदोलन से बदलकर एक हिंसक जिहादी आतंकवाद में तब्दील कर दिया गया।

ikfdLrku dh j.kuhfr %

पाकिस्तानी सेना के पूर्व प्रमुख जनरल जिया–उल–हक ने भारत के खिलाफ भारत को हजार घाव देकर लहूलुहान करना का सिद्धांत प्रतिपादित किया था। इस रणनीति के पीछे पाकिस्तान की स्पष्ट सैन्य और भू–राजनीतिक गणनाएं थीं–

- **ikjaifjd ;q) dh vleFkrk %** पाकिस्तान यह भली–भांति जानता है कि वह आकार, अर्थव्यवस्था और सैन्य क्षमता में भारत से बहुत छोटा है। 1965 और 1971 के युद्धों में पराजय के बाद उसे समझ आ गया कि वह सीधे युद्ध में भारत को कभी नहीं हरा सकता। इसलिए छद्म युद्ध एक सस्ता और प्रभावी विकल्प बन गया।
- **ijek.kq <ky dk n#i;ksx %** 1998 में दोनों देशों द्वारा परमाणु परीक्षण किए जाने के बाद पाकिस्तान ने एक खतरनाक रणनीति अपनाई। उसने यह सोचकर भारत में आतंकी हमले तेज कर दिए कि परमाणु हथियारों की मौजूदगी के कारण भारत कभी भी पाकिस्तान पर बड़ा सैन्य हमला पारंपरिक युद्ध करने की हिम्मत नहीं करेगा।
- **vLohdk;Zrk %** पाकिस्तान हमेशा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह दावा करता रहा है कि भारत में सक्रिय आतंकवादी संगठन गैर–राज्य अभिनेता हैं, जिन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है। वह इन्हें कश्मीर के स्वतंत्रता सेनानी कहकर इनका नैतिक और राजनीतिक समर्थन करता है। हालांकि, भारतीय और अंतरराष्ट्रीय खुफिया एजेंसियों ने बार–बार साबित किया है कि इन संगठनों को सीधे फंडिंग, ट्रेनिंग और लॉजिस्टिक्स मिलता है।

Hkkjr&ikd lEcU/kksa esa çeq[k vkrædoknh ?kVuk,a vkSj çHkko

सीमापार आतंकवाद ने समय–समय पर भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाली शांति वार्ताओं को न केवल बाधित किया है, बल्कि दोनों देशों को युद्ध के मुहाने पर लाकर खड़ा किया है।

o"kZ	vkrædoknh ?kVuk	ftEesnkj lxBu	f}i{kh; lEcU/kksa ij çHkko
2001	भारतीय संसद पर हमला	जैश–ए–मोहम्मद, लश्कर–ए–तैयबा	भारत ने ऑपरेशन पराक्रम के तहत सीमा पर सेना तैनात की युद्ध जैसी स्थिति बनी।
2008	मुंबई आतंकी हमला (26.11)	लश्कर–ए–तैयबा	समग्र वार्ता पूरी तरह पाकिस्तान का वैश्विक कूटनीतिक अलगाव।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, February 2025 Impact Factor: 7.67

2016	पठानकोट व उरी हमला	जैश–ए–मोहम्मद व लश्कर	भारत द्वारा नियंत्रण रेखा के पार पहली बार सर्जिकल स्ट्राइक की गई।
2019	पुलवामा हमला	जैश–ए–मोहम्मद	भारत की बालाकोट एयरस्ट्राइक संबंधों में ऐतिहासिक गिरावट, व्यापार व राजनयिक संबंध न्यूनतम स्तर पर।

l:ln ij geyk ¼13 fnlacj 2001½

लश्कर और जैश के आतंकवादियों ने भारत के लोकतंत्र के मंदिर, संसद भवन पर हमला किया। इस हमले ने भारत की संप्रभुता को सीधी चुनौती दी। इसके जवाब में भारत ने ऑपरेशन पराक्रम शुरू किया, जिसके तहत भारत–पाक सीमा पर लगभग 5 लाख सैनिकों की लामबंदी की गई। 10 महीने तक दोनों सेनाएं आमने–सामने रहीं। अंतरराष्ट्रीय दबाव में आकर जनवरी 2004 में पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ ने एक ऐतिहासिक संयुक्त बयान में वादा किया कि पाकिस्तान अपनी धरती का उपयोग भारत के खिलाफ किसी भी तरह के आतंकवाद के लिए नहीं होने देगा।

eqacbZ vkradoknh geyk ¼26 uoacj 2008½

10 पाकिस्तानी आतंकवादी समुद्र के रास्ते मुंबई में घुसे और ताज होटल, नरीमन हाउस तथा छत्रपति शिवाजी टर्मिनस सहित कई जगहों पर अंधाधुंध कत्लेआम मचाया। इस हमले में 166 निर्दोष लोग मारे गए, जिनमें कई विदेशी नागरिक भी थे। एकमात्र जीवित पकड़े गए आतंकवादी अजमल कसाब के इकबालिया बयान और जीपीएस उपकरणों से अकाट्य प्रमाण मिले कि इस हमले की साजिश पाकिस्तान के कराची में रची गई थी और इसके आका लश्कर–ए–तैयबा के जकीउर रहमान लखवी और हाफिज सईद थे। इस हमले ने भारत–पाक शांति प्रक्रिया की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी। भारत ने स्पष्ट कर दिया कि जब तक 26.11 के दोषियों को सजा नहीं मिलती, तब तक कोई औपचारिक बातचीत नहीं होगी।

mjh geyk ¼2016½ vkj j.kuhfrd cnyko

सितंबर 2016 में उरी में सेना के कैंप पर हुए हमले में 19 भारतीय सैनिक शहीद हुए। भारत ने अपनी पारंपरिक रणनीतिक धैर्य की नीति को छोड़ते हुए, हमले के 11 दिन बाद नियंत्रण रेखा के पार जाकर आतंकवादियों के लॉन्च पैड्स पर सर्जिकल स्ट्राइक की। इसने पाकिस्तान के इस भ्रम को तोड़ दिया कि भारत उसकी परमाणु धमकी के डर से सीमा पार सैन्य कार्रवाई नहीं करेगा।

iqyokek geyk ¼14 Qjojh 2019½ vkj ckykdkV ,;jLVªkbd

जैश–ए–मोहम्मद के एक आत्मघाती हमलावर ने विस्फोटक से लदी कार केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के काफिले से टकरा दी, जिसमें 40 जवान शहीद हो गए। भारत ने अभूतपूर्व कदम उठाते हुए पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के बालाकोट में स्थित जैश–ए–मोहम्मद के सबसे बड़े आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर पर हवाई हमला।

vkradokn dk cnyrk Lo:i % gkbfcM o,jQ;j vkj ub rduhd

21वीं सदी के दूसरे और तीसरे दशक में, सीमापार आतंकवाद का स्वरूप अधिक जटिल और तकनीकी रूप से उन्नत हो गया है। पाकिस्तान अब भारत के खिलाफ हाइब्रिड वॉरफेयरया मिश्रित युद्ध का प्रयोग कर रहा है–

Mªku rduhd dk n#i;ksx

हाल के वर्षों में जम्मू–कश्मीर और पंजाब की सीमाओं पर पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी और आतंकी संगठनों द्वारा चीनी निर्मित ड्रोनों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जा रहा है। इन ड्रोनों का उपयोग रात के अंधेरे में सीमा पार से अत्याधुनिक हथियार, जाली भारतीय मुद्रा और भारी मात्रा में नशीले पदार्थों को भारतीय क्षेत्र में गिराने के लिए किया जाता है। इसे नार्को–आतंकवाद कहा जाता है, जिसका उद्देश्य भारतीय युवाओं को नशे की लत में धकेलना और उससे मिले पैसे से आतंकी गतिविधियों को फंड करना है।

lkbcj Li:l vkj lk'ky ehfM;k dk tfj, dêiFk

आतंकवादी संगठन अब सीधे भर्ती करने के बजाय एन्क्रिप्टेड सोशल मीडिया ऐप्स और वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क का सहारा ले रहे हैं। पाकिस्तान में बैठे आका कश्मीर और भारत के अन्य हिस्सों के युवाओं को ऑनलाइन माध्यमों से ब्रेनवॉश कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, हाइब्रिड आतंकवादी की एक नई श्रेणी सामने आई है, जो किसी भी पुलिस रिकॉर्ड में उग्रवादी के रूप में दर्ज नहीं होते। ये आम नागरिकों की तरह रहते हैं, एक आतंकी घटना को अंजाम देते हैं और फिर सामान्य जीवन में लौट जाते हैं, जिससे उन्हें पकड़ना बेहद चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

Hkkjr dh cgqvk;keh vkradokn&fojks/kh j.kuhfr;k

भारत ने सीमापार आतंकवाद की इस दीर्घकालिक चुनौती से निपटने के लिए एक त्रि–स्तरीय रणनीति अपनाई है– आंतरिक सुरक्षा, सैन्य निवारण और कूटनीतिक आक्रामक।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, February 2025 Impact Factor: 7.67

vkrfjd lqj{kk vkj lhek çca/ku

- **0;kid ,dh—r lhek çca/ku ç.kkyh %** भारत ने पाकिस्तान से लगी सीमा (स्वब और अंतरराष्ट्रीय सीमा) पर स्मार्ट फेंसिंग, लेजर बैरियर, थर्मल इमेजर्स और रडार लगाए हैं ताकि घुसपैठ को शून्य किया जा सके।
- **dkuwuh <kpk %** भारत ने गैर–कानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम को मजबूत किया है, जिसके तहत अब संगठनों के साथ–साथ किसी व्यक्ति विशेष को भी आतंकवादी घोषित किया जा सकता है। एनआईए को आतंकी फंडिंग की जांच करने और संपत्तियों को कुर्क करने केअसीमित अधिकार दिए गए हैं, जिससे कश्मीर में पत्थरबाजी और अलगाववादी फंडिंग की कमर टूट गई है।

lU; j.kuhfr esa cnyko %

उरी और पुलवामा के बाद भारत की सैन्य डॉक्ट्रिन बदल चुकी है। भारत ने यह साफ कर दिया है कि आतंकवाद की कीमत अब पाकिस्तान की सेना को उसकी अपनी जमीन पर चुकानी होगी। भारत की सैन्य कार्रवाई अब केवल रक्षात्मक न होकर रक्षात्मक–आक्रामक हो गई है।

vrjjk"Vªh; vkj dwVuhfrd ?kjsyw

- FATF की ग्रे लिस्ट से पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक से ऋण प्राप्त करने में अत्यधिक कठिनाई हुई और उसे मजबूरन हाफिज सईद और मसूद अजहर जैसे आतंकियों पर दिखावे की ही सही, कानूनी कार्रवाई करनी पड़ी।
- वैश्विक मंचों पर पाकिस्तान का अलगाव : भारत ने सार्क शिखर सम्मेलन का बहिष्कार कर यह संदेश दिया कि आतंकवाद के साए में क्षेत्रीय सहयोग संभव नहीं है।

lhekikj vkradokn dk cgqvk;keh çHkko

इस समस्या के प्रभाव केवल सैन्य क्षति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसके व्यापक सामाजिक–आर्थिक आयाम हैं।

vkfFkd çHkko

- **j{kk ctV esa of)**
- **i;Vu vkj fodkl dk {kfr**

lkekftd vkj ekuoh; çHkko

- **funk"k ukxfjdksa dh tku dk uqdlku %** पिछले तीन दशकों में हजारों निर्दोष नागरिक, सुरक्षा बल के जवान और पुलिसकर्मी सीमापार आतंकवाद की भेंट चढ़ चुके हैं।
- **d'ehjh ifMrksa dk iyk;u %** 1990 में पाकिस्तानी समर्थित आतंकवादी संगठनों (जैसे जेकेएलएफ) द्वारा कश्मीरी हिंदुओं (पंडितों) का बड़े पैमाने पर नरसंहार और उत्पीड़न किया गया, जिसके कारण लगभग 3 से 4 लाख कश्मीरी पंडितों को अपनी सदियों पुरानी मातृभूमि छोड़कर शरणार्थी शिविरों में रहने को मजबूर होना पड़ा।

pqukfr;ksa vkj Hkfo"; dh jkg

भारत और पाकिस्तान के बीच सीमापार आतंकवाद की समस्या का समाधान इतना सरल नहीं है, क्योंकि इसके पीछे गहरी संरचनात्मक चुनौतियां हैं।

Hkkoh lek/kku

सीमापार आतंकवाद की समस्या से पूरी तरह निजात पाने के लिए भारत को निम्नलिखित रणनीतियों पर निरंतर काम करना होगा–

1- uks&d,Eçkekbt i,fyh % भारत को अपने इस रुख पर अडिग रहना चाहिए कि जब तक पाकिस्तान आतंकवादियों के लॉन्च पैड्स, ट्रेनिंग कैंप्स को पूरी तरह बंद नहीं करता ।

2- rduhdh J"Brk % कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित ड्रोन–विरोधी प्रणालियों, उपग्रह निगरानी और वास्तविक समय खुफिया जानकारी साझा करने के तंत्र को और मजबूत करना होगा ताकि सीमा अभेद्य बनी रहे।

3- d'ehj dk vkfFkd ,dhdj.k % कश्मीर के स्थानीय युवाओं को रोजगार, कौशल विकास और मुख्यधारा की राजनीति से जोड़कर आतंकवाद के इकोसिस्टम की भर्ती प्रक्रिया को हमेशा के लिए सुखा देना चाहिए। जब स्थानीय समर्थन खत्म हो जाएगा, तो विदेशी उग्रवादी टिक नहीं पाएंगे।

4- foÙkh; lkrksa ij çgkj % हवाला नेटवर्क, क्रिप्टोकरेंसी के जरिए होने वाले आतंकी लेन–देन और नार्को–तस्करी के खिलाफ वैश्विक स्तर पर वित्तीय खुफिया एजेंसियों के साथ मिलकर काम करना होगा।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, February 2025
Impact Factor: 7.67

3- fu"d"k

निष्कर्ष यह है कि सीमापार आतंकवाद भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों के सामान्यीकरण के मार्ग में सबसे बड़ी और बुनियादी बाधा है। पाकिस्तान ने जिस आतंकवाद को भारत को कमजोर करने के लिए पाल–पोसकर बड़ा किया था, आज वह भस्मासुर बनकर स्वयं पाकिस्तान की आंतरिक स्थिरता, अर्थव्यवस्था और समाज को भी निगल रहा है। भारत एक वैश्विक महाशक्ति बनने की राह पर अग्रसर है, और वह किसी भी देश को अपनी प्रगति की रफ्तार रोकने की अनुमति नहीं दे सकता। भारत की वर्तमान रणनीति, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोपरि रखते हुए आतंकवाद के खिलाफ शून्य सहिष्णुता और आक्रामक रक्षात्मक रुख शामिल हैकृबिल्कुल सही दिशा में है। दक्षिण एशिया में शांति तभी स्थापित हो सकती है जब पाकिस्तान यह स्वीकार करे कि आतंकवाद कूटनीति का कोई उपकरण नहीं हो सकता, और वह अपनी धरती से संचालित होने वाले आतंक के कारखाने पर हमेशा के लिए ताला लगा दे।